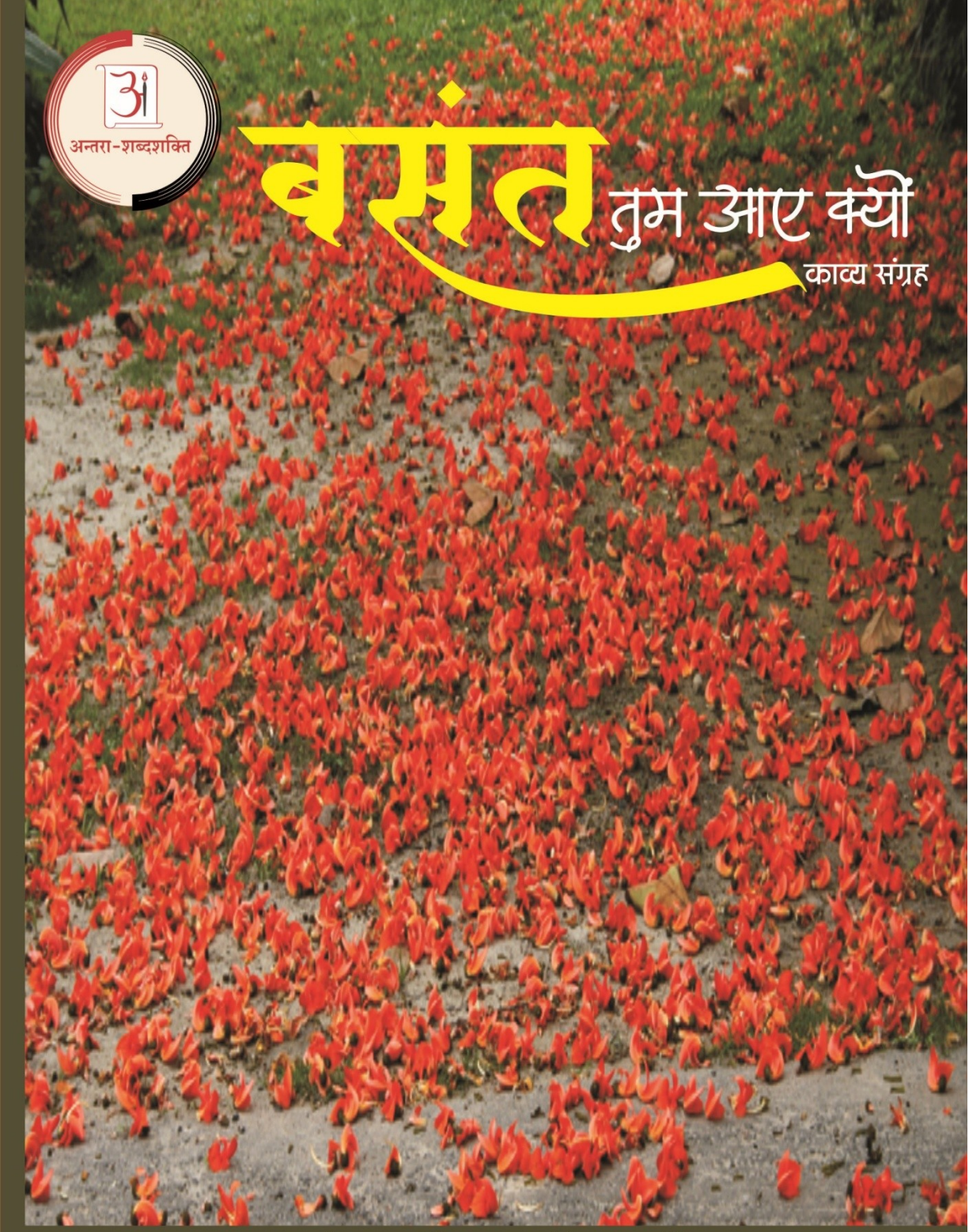

अन्तरा-शब्दशक्ति

बसंत तुम आए क्यों

काव्य संग्रह

अनिता मंदिलवार ''सपना''

बसंत तुम आए क्यों!

(काव्य संग्रह)

अनिता मंदिलवार 'सपना'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- "978-93-86666-74-1"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मुख्य कार्यालय- १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र)
४८१३३१
दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९
(मो) ९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabdshakti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com
प्रथम संस्करण २०१९- अनिता मंदिलवार 'सपना'
आवरण चित्र- संदीप सोनी,वारासिवनी
मूल्य - ६०.०० रुपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
BASANT TUM AAE KYON BY ANITA MANDILWAR SAPANA
वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

अनुक्रमणिका

लेखक की कलम से 5
1. हे दुर्गे ! हे मात भवानी 7
2. बसंत तुम आए क्यों! 8
3. कभी ख़्वाबों में आ जाओ 9

4. नशामुक्त भारत 10
5. हम-तुम 11
6. मेघदूत 12
7. संगीत 13
8. उसूल 14
9. कतरा-कतरा 15
10. शिक्षक 16
11. पुरुष उत्तम या स्त्रियाँ 17
12. नशामुक्त भार 18
13. ईर्ष्या 19
14. कलम 20
15. पहल 21
16. सिंदूर 22
17. लोकतंत्र 23
18. कैलेण्डर 24
19. तुलसी 25
20. गुलाब 26
21. मन 27
22. तिमिर 28
23. सर्दी 29
24. मेरे अपने 30
25. जिंदगी दुल्हन है एक रात की 31
26. अभिनंदन 32

लेखक की कलम से

मेरा पाँचवा काव्य संग्रह बसंत तुम आए क्यों आपके हाथों में है। मौसम का कोई भी रंग हमारे जीवन को प्रभावित करता है। मेरा ये काव्य संग्रह कुछ ऐसे ही भाव को प्रदर्शित कर रहा है।

सबसे पहली रचना माता भवानी को समर्पित है और बसंत के रंग के साथ नशामुक्त भारत की कल्पना, सर्दी और मेघदूत को पिरोया है। कलम के भाव, सिंदूर के सवाल, प्रकृति में तुलसी और गुलाब का संदेश, अंत अभिनंदन के अभिनंदन के साथ ही है।

मैं गद्य और पद्य में करीब 27 बर्षों से लिख रही हूँ। अंतरा शब्द शक्ति मेरे लिए प्रेरणा है इसके लिए, चार संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। इसके लिए आदरणीया प्रीति सुराना जी की ह्रदय से आभारी हूँ।

इस पांचवें काव्य संग्रह पर आपकी राय, आपकी समीक्षा का सवागत है।

अनिता मंदिलवार सपना
अंबिकापुर सरगुजा छतीसगढ़

हे दुर्गे ! हे मात भवानी

हे दुर्गे ! हे मात भवानी, माहेश्वरी, माँ भव मोचनी
जग्दिश्वरी, माँ नारायणी, परमेश्वरी, जग कल्याणी, हे दुर्गे!

कण कण में माँ दुर्गा भवानी, तृण तृण में जग कल्याणी
सबका हित करती हो मैया, सब जगह है तेरी ही छैंया, हे दुर्गे!

तेरी लीला है अपरंपार, करती सबका बेड़ा पार
नित करें तेरी आराधना और भक्ति संग प्रार्थना, हे दुर्गे!

तुम्हारी शरण में सभी को किनारा, तुम्हारे सिवा कौन जग में हमारा
तुम्हीं आदिशक्ति तुम्हीं हो अनन्ता, तुम्हीं हो विरल तुम्हीं में सघनता,
हे दुर्गे!

तुम्हीं कालरात्रि, तुम्हीं सिद्धिदात्री, तुम्हीं चण्डिके, तुम्हीं शैलपुत्री
तू ही विद्या, तू ही भक्ति, दया की देवी, तू ही शक्ति, हे दुर्गे!

नवरात्रि में आ रही शक्ति, जला लो मन में ज्योति की भक्ति
करो वंदना मात भवानी की, करो साधना आदिशक्ति की, हे दुर्गे!

तुम्हीं पतवार, तुम्हीं हो खेवईया,गा गा कर करे ता थैया
सपना पूरा कर दो मैया, पार लगा दो मेरी नैया , हे दुर्गे!

बसंत तुम आए क्यों !

मन में प्रेम जगाये क्यों, बसंत तुम आए क्यों ••!

सुगंधो से भरी
सभी आम्र मंजरी
कोयल कूकती फिरे
इत्ती है बावरी

सबके ह्रदय में हूक उठाने
मन में प्रेम जगाये क्यों, बसंत तुम आए क्यों ••!

हरी पत्तियाँ बनी तरुणी
आलिंगन करती लताओं का
अनुरागी बन भंवर
कलियों से जा मिला
सकुचाती हैं हवाएँ
दिलों को एहसास दिलाने
मन में प्रेम जगाये क्यों, बसंत तुम आए क्यों ••!

सरसों के फूल खिले
बासन्ती हो गई उपवन
सूर्य को दे नेह निमंत्रण
आलिंगन प्रेम पाश का
मन में प्रेम सुधा बरसाने
मन में प्रेम जगाये क्यों, बसंत तुम आए क्यों ••!

कभी ख़्वाबों में आ जाओ

कभी ख़्वाबों में आ जाओ, आ पलकों पर छा जाओ

लम्हा लम्हा बीत रहा अब पल
यादों की नदियाँ बहती कलकल
दरख्तों की राह में सपना अकेली
ओ री पवन बन जाओ सहेली
कभी ख़्वाबों में आ जाओ, आ पलकों पर छा जाओ

कहीं दूर बजता निर्झर संगीत
ओ थी गीत बन जाओ मेरे मीत

सिमटे पल रह रह मचलते
यादों की नगरी में हैं जलते
कभी ख़्वाबों में आ जाओ, आ पलकों पर छा जाओ

आँख खुलते ही जागी हसरतें
पल में ही पर सन्नाटे पसरते
न तुम न ही ख़्वाब तुम्हारा
पूरा हुआ न सपना हमारा
कभी ख़्वाबों में आ जाओ, आ पलकों पर छा जाओ

नशामुक्त भारत

नशे ने नाश कर दिया
कितने घर परिवार टूटे
धन की बर्बादी होती, घर में फाँके पड़ते हैं
बच्चे यहाँ पर देखो दो रोटी को तरसते हैं
बच्चे हैं मजदूरी करते तब चूल्हा जलता है
शिक्षा से वंचित होते वे
कई अपराधी भी बन जाते हैं
जागरूक बनें और जागरूकता बढ़ाकर
नशामुक्त समाज बनायें
नशे के कारण अपराध बढ़ रहे
इसके निवारण के लिए कदम बढाएँ आगे
छोड़े नशापान करना
जीवन जीना है गर हमको
सदविचार अपनाकर खुश रहें और खुशियाँ बाँटे
आओ साथियों
एक कदम तुम, एक कदम मैं
मिल बन जाएँ हम
नशे से दूर रहें
नशामुक्त भारत बनाने में अपने कदम बढ़ाते जायें

हम-तुम

मन मयूरा
बजती रही रागिनी
तेरी अँगुलियाँ
थिरकती रही रात भर
मन मयूरा नाच उठा यूँ
जैसे मिल गया हो जहाँ सारा ।

मदहोश मैं
तेरी खुशबूओं में डूबी
तारों ने सजायी डोली
चाँदनी सज गयी
जैसे बीना बजे सरगम जैसे ।

यौवन की लालिमा
संग
सुरभित बयार ने
कुछ कानों में कहा
और हम-तुम खो गये सपनों में
लगे देखने सपना
एक ऐसा सपना
जिसमें मैं तुम
और तुम मैं हो गए
हम नयी दुनिया में खो गए ।

मेघदूत

मेघ आता है
दूत बनकर
प्रेम संदेश लेकर
प्रिय का

आम्र किसलय हरित हुआ
बसंत का श्रृंगार
पुष्प खिल उठे
मधुप का गुंजार

खड़ी है बाला
श्याम घन कुंतल लहराये
कूकती कोयल
रात अंधेरी

जीवन कंचन बना लो
कर लो सागर सा विस्तार
फूल संग है खार
जैसे सुख दुख है दो धार

बासंती परिधान में
शोभित है सपना
खड़ी पवन की गात में
लेकर ख़्वाब अपना

संगीत

संगीत ह्रदय की धड़कन में
संगीत छुपा है लहरों में

हवाओं की सरसराहट में
बारिश के रिमझिम में
संगीत सुरों की साधना
छिपी मन के तरंगों में

गीतकार के गीतों में
छुपी है सरगम के सुर में

कन्हैया की बाँसुरी में
वीणा की तारों में
वो तो है तरंगित
कुदरत के कण-कण में

उसूल

जब जीवन में हम कोई
उसूल अपनाते हैं
तभी जीवन में
कुछ लक्ष्य बनते हैं
जब उसूल हमारे
आदर्श बन जाते हैं
वो आदर्श हमें
अच्छे इंसान बनाते हैं
ऐसे इंसान जो उसूलों पर
अडिग रहते हैं
उनके कर्म ही उनको
पहचान दिलाते हैं
उनकी छवि मानस पटल पर
अंकित हो जाते हैं
और वह आईना बन
भटके को राह दिखाते हैं
जब वह कोई सपना देखते हैं
साकार करने में जुट जाते हैं ।

कतरा कतरा

ज़िंदगी को
कतरा कतरा
जीने का दर्द झेल रही हूँ
सभी टुकड़ों को
जोड़ना चाहती हूँ
एक नयी ज़िन्दगी
बनाना चाहती हूँ
लेकिन इतना आसान है क्या
बहुत कठिन है
जिंदगी का बिखराब ऐसा है
जिसे समेट पाना मुश्किल है
मैंने जब भी समेटने की कोशिश की
तब और बिखर गयी,
बिखरती जा रही हूँ
ज़िंदगी समेटकर जीने के लिए नहीं है शायद
तोड़कर बिखराने की चीज है शायद •••••!

शिक्षक

ज्ञान का भान कराते हैं
वो सबका मान बढ़ाते हैं
तमस से उजास की ओर
जो ले जाते, शिक्षक कहलाते हैं

जीवन पथ पर सही राह दिखाते हैं
मुश्किल में हौसला बढ़ाते हैं
जिनकी महिमा अनन्त हैं
वही मार्गदर्शक शिक्षक कहलाते हैं

कर्म को ही पूजा मान लेते हैं
ईश्वर से स्थान ऊँचा पाते हैं
बंजर धरती पर भी जो फूल खिलाते हैं
वही शिक्षक जग में सम्मान पाते हैं

हर परिस्थिति में खुश रहकर सिखाते हैं
मानवता का पाठ हमें पढ़ाते हैं
माता देती नवजीवन पिता करते रक्षा
चुनौतियों से लड़ना शिक्षक सिखाते हैं

विद्या देकर ज्ञानवान बनाते हैं
पढ़ाकर लिखाकर हमारी ज्ञान बढ़ाते हैं
शिक्षक बागवान है हम फूल चमन के
शिक्षकों को शत शत प्रणाम करते हैं

पुरुष उत्तम या स्त्रियाँ

पुरूष और नारी गाड़ी के दो पहिये हैं
दोनों का समान होना जरूरी है
कैसे कहें उत्तम कौन, कहना मुश्किल है
दोनों हैं उत्तम अपनी अपनी जगह पर
बस पुरूषों से कहना यही है
समान मानो नारी को भी

समानता मिल जाये तो
अपना रास्ता खुद तय कर लेंगी
स्त्रियाँ होती मन से भावुक
मन से उतनी ही बलवान
ठान ले जो वो कुछ करने को
रोक न सकेगा कोई जहान
बहनों, अपने आप को आगे बढ़ने दो
किसी के लिएमन में कोई बात न रखो
पुरूष भी है अपनेभाई बंधु
सोच जरा तुम खरा ही रखो
पीछे रह न जाये कोई सपना
आकर यहाँ कोई हाथ बढ़ा दे अपना !

नशामुक्त भार

नशे ने नाश कर दिया, कितने घर परिवार टूटे
धन की बर्बादी होती, घर में फाँके पड़ते हैं
बच्चे यहाँ पर देखो दो रोटी को तरसते हैं
बच्चे हैं मजदूरी करते, तब चूल्हा जलता है
शिक्षा से वंचित होते वे कई अपराधी भी बन जाते हैं
जागरूक बनें और
जागरूकता बढ़ाकर नशामुक्त समाज बनायें
नशे के कारण अपराध बढ़ रहे
इसके निवारण के लिए कदम बढाएँ आगे
छोड़े नशापान करना
जीवन जीना है गर हमको
सदविचार अपनाकर खुश रहें और खुशियाँ बाँटे
आओ साथियों
एक कदम तुम, एक कदम मैं
मिल बन जाएँ हम
नशे से दूर रहें
नशामुक्त भारत बनाने में अपने कदम बढ़ाते जायें

ईर्ष्या

एक मित्र तभी तक
आपका अच्छा मित्र है
जब तक आप उससे निम्न है
बराबरी तक भी दोस्ती निभती रहती है
पर जब आप पहुँचने लगते हैं शिखर की ओर
उनमें ईर्ष्या जैसे दुर्गुण पनपने लगते हैं
और वे जाने अनजाने
आपको शिखर से नीचे गिराने की
कोशिश में लग जाते हैं
क्या वो आपके सच्चे मित्र हो सकते हैं
क्या यही मित्रता है
जो गाहे बगाहे बस कमियाँ ही ढूँढते हैं
आपकी अच्छाइयाँ उन्हें लगती है खटकने
क्या वो मित्र है ?
ईर्ष्या मानवगत स्वभाव है
पर इससे बचा जा सकता है
मन में प्रेम उत्पन्न कर
अब ये हम पर निर्भर करता है
कि हम किसे चुनते हैं ईर्ष्या या प्रेम !

कलम

कलम को दीप बनाकर
स्याही को तेल बना लें
मन को दीपक बनाकर
प्रेम की ज्योत जला लें••••!

शब्द स्वर्ण से बन जायेंगे
अक्षर मोती से चमकेंगे
वाक्य तारों की टिमटिम
कविता बनकर दमकेंगे•••••!

कलम से ऐसा कुछ लिखो
देश की शान बढ़ जाए
मन की ताकत को स्याही बना लो
सपना ऐसा देखो अपना मान बढ़ जाए ••••

पहल

आओ हम अब पहल करें
प्रकृति को बचाने की
अब शुरूआत करें
पहल बनेगा
एक दिन अभियान
कर्तव्यनिष्ठ हो जाये
करें कर ताल गान
भूमि को बचाये
तभी बचेगा खान
पर्यावरण शुद्ध होगा
तभी मिलेगा जीवन दान
जब वन होंगे
तभी वन्य जीव भी
जीव संरक्षित तो
धरती भी हरी भरी
और खुशहाल
वनों में चहल पहल
चिड़ियों की चहचहाहट
मोर का नृत्य
लुभाएगी मन को
अब स्वच्छ पर्यावरण का
सपना देखें हम
तभी हकीकत में भी कर पायेंगे हम ----

सिंदूर

माँग का सिंदूर करती है सवाल
मुझे अपने सिर पर क्यों सजा रखा है !

बिछुये, महावर, चूड़ियाँ काजल,पायल, गजरे सभी पूछे
हमें अपने अंगों से लगा क्यो रखा है !

सिंदूर की रेखा सिर से पाँव तक
एक स्पंदन सी जगाती मन में !

प्यार के एहसास कराती है ह्रदय में
किसी के होने का ख़्याल भर दे मन में !

सपना जगाये मन में आँखो का काजल
महावर, पायल पाँव की चाल बदल देती है !

चूड़ियाँ खनकती हैं जगते हैं ख़्वाब सारे
मिल जाते सभी सवालों के जवाब

कोई है जिसके स्पर्श से पत्थर में
आ जाते हैं प्राण हाँ कोई है ••••••!

लोकतंत्र

रखने को स्वस्थ लोकतंत्र
आओ करें मतदान
अपने स्वार्थो से ऊपर उठ
देश के लिए
जागें हम
हम चाहते हैं

हर तरफ स्वस्थ वातावरण हो
इसके लिए करें मतदान
लोकतंत्र तो ऐसा हो
जिसमें समानता की बात हो
न हो कोई भेदभाव
न किसी को हो अभाव
समानता की बात
बस न रहे किताबों में
अमल हो जायेजब ये
तभी सही है लोकतंत्र ---!

कैलेण्डर

कैलेण्डर शब्द जैसे ही सुनाई देता है
हमें याद आता है
बारह महीनों का
पन्ने दर पन्ने खुलने वाला पोस्टर !

कैलेण्डर ही हमें याद दिलाता है
हम आगे बढ़ रहे हैं
समय चलायमान है
क्योंकि दिन और तारीख बदल रहें हैं !

कैलेण्डर ही अपने में संजोये रहता है
पर्व-त्योहारों की सूची
और हम खुश हो जाते हैं
उन्हें मनाने में जुट जाते हैं !

मित्र, रिश्तेदारों के
जन्मदिन, शादी की तारीखें
सब तो कैलेण्डर में अंकित होती है
तभी हम उनकी खुशी में शरीक हो पाते हैं !

पन्ने पलटते जाते हैं
वैसे ही हमारे जीवन के रंग भी बदलते जाते हैं
"सपना" भी जुड़ा होता है कैलेण्डर से
तभी हम समय के साथ सपने पूरे कर पाते हैं ---!

तुलसी

मैं तुलसी हूँ हरी भरी
घर आँगन में निखर रही
मेरी महिमा अपरंपार
गुणों की है मैं भंडार

मन में दीप जले
बन ह्रदय की बाती
दिल की ज्योति
जगमग करती रहती

जड़ में छुपाये रहती
शांति, स्नेह की धारा
वायु ने जब छीना
तरू से जब पत्र सारा

मैं तुलसी हूँ
आँगन में हरियाती
जग सारा मैंया मान
आराधना है करता

मुझको मानते पवित्र
जैसे मुझमें भरे हो इत्र
गुणों की है मैं खान, आँगन की है मैं शान

गुलाब

मेरे बगीचे में
खिला है गुलाब
अप्रतिम सुन्दरता उसकी
जो हमेशा ही
जीने की प्रेरणा देती है मुझे
कांटो के बीच रहकर भी मैं
अपनी सुन्दरता के साथ
खुशबू बिखेरतीं हूँ
जीवन में सुख दुख आते रहते हैं
पर हमें अपनी

खूबसूरत पहचान बनाये रखनी है
ये है हमारा विचार आज का
आप का क्या ख़्याल है
दोस्तों
अपने विचार से रूबरू जरूर कराइएगा
सपने में जो सपना हम देखते हैं
कोशिश यही है पूरे हो
इसके लिए आप सबकी शुभकामनाएँ,
स्नेह और आशीर्वाद हमेशा हमें मिलता रहे
यही है कामना
हाँ, बस यही कामना ••••••!

मन

दोस्त क्यों दुश्मन बने तुम
दोस्ती अब तो निभा देना

तुम्हें मालूम है हुनर मेरा
अश्कों को यूँ छुपा लेना

सुबह होते ही तुम सपना
नींद से मुझको जगा देना

पलकों पर पलते हैं ख़्वाब
फिर कोई सपना दिखा देना

आज उदास है फिर मन मेरा
कोई गीत अब गुनगुना देना

तिमिर

ऐ प्रभु
ऐसा कुछ कीजिए
तिमिर तिरे संसार से
उजाला भर जाए
सभी के ह्रदय में
सब अच्छाई के रास्ते ही चुनें
दुर्गुणों से दूर रहें
हमारे कर्म ही
निर्धारित करते हैं हमारे भाग्य
कर्म करतें जाए
फल की चिंता क्यों
कर्म हों अच्छे
फल मीठे ही होंगे
भले देर से ही सही
सपने जरूर देखो
आने वाले कल के
सपना साकार होगा निश्चित ही
कुछ इंतजार ही सही
करना सीखें
जल्दी क्या है --!

सर्दी

सर्दी की ठिठुरन अलग है सबके लिए
जहाँ धनाढ्य लोग पहने होते हैं स्वेटर, टोप
वहीं गरीब, मजदूर जलती लकड़ी की आग में
ठिठुरन से बचने का उपाय ढूँढता है
जहाँ कोई रजाई में घुसकर मीठे ख्बाव बुनता है
वहीं कोई ठिठुरता हुआ
रात बीत जाने का इंतजार करता है
कब सुबह हो और सूरज आये
और हम थोड़ी सी धूप से
अपने शरीर को गर्मी दे पायें
सर्दी की रात है तो वही
पर कोई आने वाले कल के सपने देखता है
कोई सुबह ठिठुर कर प्राण गँवा देता है
जीवन तो उनमें भी है
उन्हें भी जरूरत है
मौसम के हिसाब से सब सुविधाओं की
हम जितना भी कर सके
जरूर मदद करें उनकी
दुआयें ही मिलेगी बदले में
जो आपके लिए अच्छा ही होगा
मन में संतुष्टि अलग
कि हम कुछ कर पायें उनके लिए ---!

मेरे अपने

उनसे बिछड़े जमाना बीता
दिल में यादें आज भी है ।
कोई देखा न दिल का रोना
शबनमी ऑखें आज भी है ।। 1 ।।

कौन था वो और कहाँ से आया
कोई नहीं इसे यहाँ जान पाया ।
आती-जाती मौजों की रवानी में
दिलकश यादें आज भी है ।। 2 ।।

तस्वीरें है यहाँ यादों का दर्पण
हमनें कर दिया खुद का तपेण ।
जी रहें अब भी तुमसे बिछड़कर
अधखिले सपने आज भी हैं ।। 3 ।।

अब तो आओ, एहसास दिलाओ
तुम हो, तुम हो, तुम हो ।
कहते हैं बंधे ये प्रीत के धागे
मेरे साथ अपने आज भी है ।। 4 ।।

जिंदगी दुल्हन है एक रात की

जिंदगी दुल्हन है एक रात की ।
गम क्यों करें किसी बात की ।।

जी लें हम खुशी से ज़िन्दगी ।
ईश्वर की कर ले जरा संदगी ।।

आओ सबको लगा लें गले ।
सबसे प्यार से हम भी मिलें ।।

चलते रहना है सुबह से शाम ।
चिंता अब नहीं छाया हो या घाम ।।

बैर नहीं किसी से अपना यहाँ ।
सबसे प्रेम करे यहाँ तो जहाँ ।।

इबादत में ही हाथ उठे अपना ।
आगे बढ़ने की ही देखें सपना ।।

अभिनंदन का अभिनंदन करो

अभिनंदन का आओ अभिनंदन करो
प्रभु का ह्रदय से आज यहाँ वंदन करो

साठ घंटे साठ बरस समान बीते
अब सांसो से ह्रदय स्पंदन करो

धरा हुई पावन उन पावन कदमों से
अभिनंदन का वंदन कर चंदन करो

छोड़ो जाने दो दुश्मनी की बातें
आज प्रेम से प्रेम का वंदन करो

शान से घर देखो वापसी करते हुए
अभिनंदन का आज पग वंदन करो

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - श्रीमती अनिता मंदिलवार 'सपना'

जन्म - 04 फरवरी

शिक्षा - स्नातकोत्तर (वनस्पति शास्त्र, हिन्दी और अंग्रेजी साहित्य) बी.एड., पी.जी.डी.सी.ए.

मो. - 9826519494

कार्यक्षेत्र - व्याख्याता शास.हाई स्कूल, असोला, अंबिकापूर (सरगुजा) छ.ग.

विधा - गद्य एवं पद्य (कविता, गज़ल, नाटक, रुपक, लेख, कहानी, हाइकु)

प्रकाशन 1. सांझा संकलन - हाइकु की सुगंध, काव्य अमृत, हिन्दी सागर पत्रिका, मातृभाषा, गज़ल संग्रह-गुंजन, कथा संकलन-कथा सेतु, कलमकार, नारी काव्य सागर, रवीना-मेरी कविताएं विशेषांक, निभा- कविता कहानी महाविशेषांक, वूमन आवाज, संकलन-(सृजन समीक्षा) अंतरा शब्द शक्ति, सपनों की उड़ान (काव्य संग्रह)

2. नवभारत, दैनिक भास्कर, लोकमत, अंबिकावाणी समाचार पत्र में कविता एवं लेख।

3. स्वर मंजी, सत्य ज्ञान समागम, व्यंजना में कविताओं का प्रकाशन।

सम्मान 1. काव्य अमृत सम्मान 2. हिन्दी सागर सम्मान 3. दोहा शतकवीर सम्मान 4. हिन्दी साहित्य सेवी सम्मान 5. दोहा शतकवीर कलम की सुगंध सम्मान-2018। 6. अंतरा शब्द शक्ति सम्मान 7. अर्णव कलश एसोसिएशन द्वारा साहित्य के दमकते दीप साहित्यकार सम्मान - 2017। 8.साहित्य संगम संस्थान दिल्ली द्वारा हिन्दी वीरांगना सम्मान-2018। 9. साहित्य संगम संस्थान दिल्ली द्वारा श्रेष्ठ रचनाकार सम्मान - 2018। 10. अर्णव कलश एसोसिएशन बाबू बालमुकुन्द गुप्त हिन्दी साहित्य सेवा सम्मान - 2017। 11. साहित्य संगम संस्थान द्वारा साहित्य गौरव सम्मान। 12. विश्व रचनाकार मंच द्वारा नारी काव्य सागर सम्मान। 13. अन्तरा शब्दशक्ति सम्मान 2019

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-86666-74-1

मूल्य- 60/-